P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में जाटों का योगदान

नवीन दहिया सहरावत
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
महाराजा विनायक ग्लोबल युनिवर्सिटी, जयपुर
राजस्थान

सारांश

जाट भारत में रहने वाला एक क्षत्रिय समुदाय है। भारत में मुख्य रूप में पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, में बसते है। पंजाब में यह जाट कहलाते है तथा शेष प्रदेशों में जाट कहलाते है। जाट मुख्यतः खेती करने वाली जाति है, लेकिन अंग्रेजो के अत्याचारों और निरंकुश प्रवृत्ति ने उन्हें एक बड़ी सैन्य शक्ति का रूप दे दिया। जाटों ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया।

भारत एक सदी तक अंग्रेजों का गुलाम रहा इस गुलामी की बेड़ियो को काटने के लिए जाटों ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

1857 के पहले स्वांतन्त्र्य समय से लेकर 1947 तक आजाद भारत की अपनी लोकतांत्रिक सरकार बनी उस वक्त भी नए भारत की नींव निर्माण में उन्होंने अपना शतः प्रतिशत योगदान दिया जैसे किः– राजा नाहर सिंह, राजा महेन्द्र प्रताप, शाहमल तोमर, मोहर सिंह हीरासिंह, स्वामी (गोपालदास, ओमानन्द सरस्वती, केशवानन्द, स्वतंत्रतानन्द, भक्त फूल सिंह, और सर छोटू राम जी आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्तमान लेख विशेष रूप से स्वतंत्रता आन्दोलन में जाटों के योगदान की उजागर करने का प्रयास है।

मुख्य शब्द : स्वतंत्रता आन्दोलन, 1857–1947, जाटों का योगदान।

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय आह्वानों, उत्तेजनाओं एवं प्रयत्नों से प्रेरित भारतीय राजैतिक संगठनों द्वारा संचालित अहिंसावादी और सैन्यवादी आन्दोलन था जिनका एक समान उद्देश्य अंग्रेजी शासन को भारतीय उपमहाद्वीप से जड़ से उखाड़ फेंकना था। इस आन्दोलन की शुरूआत 1857 में हुए सिपाही विद्रोह को माना जाता है। स्वाधीनता के लिए हजारों लोगों ने अपने प्राणों की बलि दी। हजारों सालों से जाट स्वातन्त्र्यय युद्धों में सामूहिक रूप से भाग लेते आए है परन्तु इतिहास में उनके अमर बलिदानों की कहानी का उल्लेख नहीं हुआ है। जाट रण भूमि में अपने जौहर बार–बार दिखला चुका है फिर भी राजपूत, सिख, मराठो जैसे युद्ध सम्बधी प्राचीन दन्त–कथाएं उसके भाग्य में नहीं है। परन्तु अपने मातृभूति के लिए जिस दृढता से जाट लड़ सकता है और कोई नहीं लड़ सकता। ये अपनी स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं। 1857–1947 एक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ और देखते ही देखते पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में एक एक विराट रूप धारण कर लिया इन प्रान्तों के जाट आर्यसमाज के अनुयायी बन गए। आर्यसमाज के जाट धार्मिक नेताओं ने जैसे स्वामी स्वतंन्त्रानन्द जी, महात्मा भक्त फूल सिंह जी, आचार्य भग्वानदेव (स्वामी ओमानन्द जी) आदि ने लोगों में देशभक्ति एवं स्वतंत्रता प्राप्ति की भावना पैदा की। जाट स्वतंत्रता प्रेमी, सच्चे देशभक्त, अग्रेजीं को देश से बाहर निकालने के पक्ष में तथा किसानों के सच्चे हितकारी हैं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े सभी जाट वीरों के नाम भर लेना असंभव है यह तो एक झलक भर हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से ऐसे ही कुछ महान जाट वीरों के बलिदानों के बारे में जानते है, जिन्होनें स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई उनका जिक्र यहां लाजमी हैं।

शोध के उद्देश्य

1. अंग्रेजो के अत्याचारों और निरंकुश प्रवृति ने जाटों को किस प्राकार प्रभावित किया इसका विस्तृत अध्ययन इस शोध का उद्देश्य होगा।
2. जाटो ने (1857 की क्रांति) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ने अंग्रजों को किस प्रकार प्रभावित किया और इसके क्या परिणाम हुए प्रस्तुत शोध का उद्देश्य होगा।
3. राजा– महाराजाओं से लेकर एक आम नागरिक ने अपना योगदान किस प्रकार दिया और इनके क्या परिणाम हुए शोध का उद्देश्य होगा।

4. छुपे हुए विषयों के सामने लानांस्वतंत्रता आन्दोलन में स्थानीय ऐतिहासिक परिकल्पना को उजागर करना शोध का उद्देश्य
5. स्वतंत्रता आन्दोलन में सामाजिक स्तर पर जनजागरूकता फैलाने में जाटों के योगदान को उजागर करना।

शोध की पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु शोधकर्ता की पद्धति ऐतिहासिक, व्याख्यात्मक, समालोचनात्मक रही है। ज्ञात तथ्यों तथा इस विषय पर उपलब्ध पूर्ववर्ती लेखकों के विचारों का विश्लेषण, स्पष्टीकरण, मूल्यांकन परीक्षण करते हुए प्राप्त परिणामो का सत्य की कसौटी पर परीक्षण करने का प्रसास किया गया है। शोध अध्ययन में सबसे महत्वपूर्ण वस्तु प्रस्तुत अध्ययव की विषय एवं शोध सामग्री की होती है। इस विषय पर प्राथमिक पर सामग्री भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार एवं इतिहासकारों की विभिन्न रचनाओं में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। इस विषय पर माध्यमिक सामग्री का अभाव हाने के कारण प्रस्तुत शोधपत्र में प्राथमिक स्तर की शोध सामग्री का अधिक उपयोग किया गया है।इसके अलावा प्रस्तुत शोध सामग्री की विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त कर तथा शोध कर ही प्रयोग में लाया गया है।

सहित्यावलोकन

सन् 1857–1947 के स्वतंत्रता संग्राम में जाटों का योगदान के सन्दर्भ में किए गए शोध की उद्देश्यों तथा शोध पद्धति का विवरण प्रस्तुत करते हुए इस विषय पर लिखे गए साहित्य का अवलोकन, विश्लेषण, एवं मूल्यांकन किया गया है यथा–

1. डॉ॰ महेन्द्र नारायण शर्मा और डॉ॰ राकेश शर्माः–सन् सतावन के के क्रांतिवीर बाबा शाहमल जाट'' प्रस्तुत पुस्तक में 1857 के क्रांतिवीर बाबा शाहमल जाट की यात्रा की एक प्रस्तुति है। बाबा शाहमल ने 1857 की जनक्रांति में तत्कालीन जनपद के तहसील बड़ौत और आसपास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हजारों किसानों का कुशलतापूर्वक नेतृत्व किया और अंग्रेजों के विरूद्ध अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों को बलिदान कर दिया।
2. डॉ॰ पेमाराम और डॉ॰ विक्रमादित्यः–'जाटों की गौरवगाथा' पुस्तक में जाट कौन थे उन महान चरित्र नायकों का वर्णन किया है जिन्होंने अन्धकार और अज्ञानता में सोई हुई जाट कौम को जगाने के लिए अपने जीवन के अमूल्य समय को इस दिशा मे लगा जाटों के जीवन को सुखमय बनाने का प्रयास किया।
3. ठाकुर देशराजः–''जाटा इतिहास' प्रस्तुत पुस्तक में अत्यंत खोजपूर्ण विशाल जाट समाज की उत्पति और विकास पर आज भी प्रमाणिक ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठापित है। इस ग्रन्थ नें यह सिद्ध कर दिया कि केवल जन्म के आधार पर अपने आप को कुलीन घोषित करने वाला सामती वर्ग ही समाज का भाग्य विधाता नहीं है, अपने पुरूषार्थ और परिश्रम की रोटी कमालने वाले मेहनतकश समाज को निम्न कोटि का समझना उसके साथ नाइंसाकी है। ''ठाकुर देशराज'' के जाट इतिहास' में तत्कालीन मिथलों को खंडित करने वाले कई तथ्य समाहित थे।
4. कप्तान दलीपसिंह अहलावतः–'जाटवीरों का इतिहास'' पुस्तक की रचा करके लेखवा ने भारतीय इतिहास के मर्म को हुआ है। जाट शूरवीरों के कोशल की गौरवगाथा को इतिहास के परिपेक्ष्य में वर्णित किया है। युद्ध के समय में तलवार के धी और शांति के समय में हलपति का लेखक ` बहुत ही सुन्दर ढंग से चरित्र–चित्रण किया है।
5. भलेराम बेलीवालः–जाट योद्धाओं का इतिहास'' में वेदों, महाभारत, उपनिषद, पुराणों, देश–विदेशी लेखकों द्वारा हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी की पुस्तकों से जाटा लेखकों के बारे में वर्तमा सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर करगिल तक के तथ्य एवं प्रकाण जुटाए है।
6. स्वामी ओमान्द सरस्वतीः–''देशभक्तों के बलिदान'' में लेखक ने जाटवंश के वीरों की कुछ घटनाओं से लेकर लिखा है। लेखक ने जाट, ब्राह्मण, राजपूत और वैश्य आदि सभी का सामान्यतः उल्लेख किया है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में जाटों का योगदान

बाबा शाहमल ने 1857 की जनक्रांति में तत्कालीन जनपद के तहसील बड़ौत और उसके आसपास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उन्होंने हजारों किसानों का कुशलतापूर्वक नेतृत्व किया। बाबा शाहमल ने अपनी वीरता से अंग्रेजों के साधनों को ठप्प किया और इस क्षेत्र को दिल्ली के लिए आपूर्ति क्षेत्र में बदल दिया। उन्होंने हिडंन पुल को तोड़कर अंग्रेजों के लिए बहुत मुश्किल पैदा कर दी। 19 जुलाई 1857 को अंग्रेजों की एनकील्ड शइफलों से सुसजिजत सेना के साथ भयकंर युद्ध करते हुए लगभग 200 सैनिकों के साथ वीरगति प्राप्त की। 18 मार्च 1857 को मथुरा में राजाओं की एक गुप्त मीटिंग हुई जिसमें राजा नाहर सिंह की शिरमोर बनाया गया और बहादुरशाह जाफर ने उन्हें दिल्ली के पश्चिमी हिस्से को चाक चौवंद रखने के लिए कहा उन्होंने पश्चिमी सीमा से अंग्रेजों को दिल्ली में घुसने नहीं दिया इसलिए अंग्रेज उन्हें आयरन गेट ऑफ दिल्ली कहने लगे। राजा नाहर सिंह की बहादुरी से तिलमिला अंग्रेजों ने उन्हें संधि के लिए दिल्ली बुलवाया और उन्हें बंदी बनाकर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। इसमें उन्हें दोषी कराकर देते हुए 9 जनवरी 1958 को दिल्ली में फॉसी की सजा दी गई। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों की जीत हुई अंग्रेजों ने देशी रियासतों में राजाओं की अधिनस्थ कर जागीरदारों को बड़े–बड़े अधिकार दे दिए। मोहर सिंह ने 1927–1934 तक लोगों में अपने भजनों व मिसालों द्वारा शिक्षा, सामाजिक सुधार तथा छुआछूत को मिटाने के लिए जागीरी जुर्म के खिलाफ संघर्ष में काफी योगदान दिया। मोहर सिंह पूनिया, ने अपनी कविताओं, भजनों व भाषणों द्वारा अंग्रेजों के शोषण, व अन्याय अत्याचारों के विरूद्ध बिगुल बजाया। जाटवंशज आर्यसमाजी धार्मिक नेता स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, महात्मा भक्त फूल सिंह, आचार्य भगवान देव जी, चौ॰ छोटूराम भी आर्यसमाजी थे जो स्वामी दयानन्द सरस्वती को अपना धार्मिक गुरू मानते थे। आर्यसमाजी तो अंग्रेजों को देश से बाहर निकालकर

स्वराज चाहते ही थे। अतः इन्होंने कांग्रेस को अपनाया और हजारों लोगों ने राष्ट्रीय आन्दोलनो में भाग लिया भारतीय जनता को देश की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। अगस्त 1920, में चौ॰ छोटूराम ने कांग्रेस का साथ छोड़ दिया क्योंकि चौ॰ साहब गांधी जी के असहयोग आन्दोलन से सहमत नहीं थे। उनका विचार था कि इस आन्दोलन से किसानो का हित नहीं होगा। उनका मत था कि आजादी की लड़ाई संवैधानिक तरीकों से लड़ी जाए। कुछ बातों पर मतभेद होते हुए भी चौ॰ साहब गांधी जी के प्रशंसक रहें। चौ॰ साहब ने अपना कार्यक्षेत्र उ॰प्र॰, पंजाब, राजस्थान तक फैला लिया और जाटों का सशक्त संगठन तैयार किया।

देश के जागरण के साथ ही देशी रियासतों के लोगों में भी बड़ी तेजी से जागृति आई। सन् 1920 के दशक में ढिकानेदारों और जागीरदारों के अत्याचार दिन–प्रतिदिन बढ़ गए। इस कारण किसानों द्वारा विभिन्न आन्दोलन चलाए गए, साथ ही देश भर में गांधी जी के नेतृत्व में देश में स्वतंत्रता आन्दोलन भी चल रहा था। इन सभी के कारण राज्य की प्रजा में जागृति आई और उन्होंने सगढन बनाकर अत्याचारों के विरूद्ध आन्दोलन शुरू किया जो प्रजामण्डल आन्दोलन कहलाए।

सन् 1938 के कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में एक प्रस्ताव प्रात हुआ जिसमें कहा गया कि कांग्रेस रियासती जनता से अपनी एकता की घोषणा करती है और स्वतंत्रता को उनके संघर्ष के प्रति सहानुभूति प्रकट करती है, त्रिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस ने रियासत जनता के प्रति समर्थन की घोषणा कर दी, इससे जनता में बड़ा उत्साह और उमंग जागी।

सन् 1938 के प्रजामण्डलों की कोई राजनीतिक गतिविधियां नहीं थी। इसी साथ प्रजामण्डल ने संवैधानिक सुधार एवं कृषि सुधार के लिए आन्दोलन चलाए। अब तक प्रजामंण्डल का काम शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित था। ग्रामीण क्षेत्र में पैढ न होने से प्रजामण्डल में जाट पंचायत के साथ जागीदार विरोधी संधि में शामिल होने पर विचार किया शेखावटी में भी यह विचार चल रहा था कि क्या हमें किसान पंचायत का विलय प्रजामण्डल में कर देना चाहिए। एक गुट जिसमें चौ॰ घासीराम, पंडित ताडकेश्वर शर्मा, विद्याधर कुल्हारी आदि थे की सोच थी कि इससे किसानों की मांगे अपेक्षित होगी।

दूसरी ओर हरलाल सिंह, चौ॰ नेतराम सिंह, आदि इस विचार के थे कि प्रजामंडल जैसे सशक्त सगंठन में शामिल होने से किसान पंचायतों को सीमित क्षेत्र से निकालकर विशाल क्षेत्र तक पहुँचाने का यह एक सशक्त माध्यम बन सकेगा। जिससे जांगीरी जुल्मों का वे अधिक सक्रियता से और ताकत से मुकाबला करने में समर्थ होंगे। इस द्विविध विचारधारा के कारण शेखावटी का राजनीतिक संघर्ष विभाजित हो गया। किसान आन्दोलनों में महिलाओं ने भी पुरूषों का बढ़–चढ़कर साथ दिया।

सीकर किसान आन्दोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। सीहोट के ठाकुर मानसिंह द्वारा सीतिया बास नाम के गांव में किसान महिलाओं के साथ किए गए दुर्व्यवहार के विरोध में 25 अगस्त 1934 को कटराथल नामक स्थान पर श्रीमति किशोरी देवी की अध्यक्षता में एक विशाल सम्मेलन किया। इस सम्मेलन में लगभग 10,000 महिलाओं ने भाग लिया जिनमें श्रीमती दुर्गा देवी, श्रीमती रमादेवी, श्रीमती उतमादेवी आदि प्रमुख थी। इस सभा की अध्यक्षता श्रीमती किशोरीदेवी धर्मपत्नी हरलालसिंह थी। यह महिला सभा इस इलाके में प्रथम व अनूठी घटना थी। महिलाएं विभिन्न रंग–बिरंगे परिधानों में सज्जित, गीत गाती हुई, कटराथल के लिए आई, बात–बात में सामंतो का उपहास और उन्हें चेतावनी देते हुए, शेखावटी की मर्दानी महिलाएं सभास्थल पर एकत्रित हुई। भारत बीर सपूतों की धरती है। और यहां आजादी की लड़ाई में कई वीरांगनाओं ने भी अपना बलिदान दिया।

निष्कर्ष

जाट स्वतंत्रता प्रेमी है और अन्याय व अत्याचार करने वालों के विरूद्ध अपनी तलवार उठाते है। ये अपनी स्वतंत्रता को कायम रखने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देते है। जाट सच्चे देशभक्त है इतिहास साक्षी है कि देश को जब–जब क्षत्री भावना प्रधान वीर युवकों की आवश्यकता हुई तब–तब जाट जाति ने अपने देश की रक्षा एवं सेवा में अपने नौनिहालों की उत्सर्ग करने को अमर उदाहरण दिए। प्राचीनकाल से भारतवर्ष पर विदेशी आक्रमणकारियों से टक्कर लेकर जाटों ने देश की रक्षा की। अंग्रेजों ने धीरे–धीरे इस भारतवर्ष पर अपना राज्य स्थापित किया और उन्होनें भारतीयों के साथ अन्याय और अत्याचार किए। इसकी फलस्वरूप भारतवासियों ने अंग्रेजों के विरूद्ध 1857 ई॰ में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम किया जिसमें अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर को अपना नेता बनायां

अंग्रेजो को भारत से निकालकर किसी–न–किसी रूप में लगे रहे अन्त में भारतीयों को सफलता मिली और 15 अगस्त 1947 ई॰ को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हो गई। अब देखना यह है कि इतनी बड़ी सफलता कैसे मिली इसके क्या कारण थे, जाटों ने अंग्रेजों से किस प्रकार युद्ध किए तथा बलिदान दिए! जिससे देश आजाद हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आधुनिक जाट इतिहास : लेखक–महेन्द्र सिंह आर्या, प्रकाशन जयपाल ऐजेन्सी, आगरा, 1998।

स्नसतावन का कातिवीर बाबा शाहमल जाट, लेखक– महेन्द्र नारायण शर्मा, 2007।

जाट इतिहास; (उत्पत्ति और गौरव खंड) लेखक–ठाकुर देशराज, जधीना–भरतपुर, प्रकाशकः ठकुरानी निवेणी देवी मित्रा मण्डल प्रेस, राजामण्डी आगरा, 1937।

जाट योद्धाओं के बलिदान :– लेखकः भलेराम बेनीवाल, प्रकाशनः प्रकाशन जयपाल ऐजेन्सी, आगरा, 2005।

जाट इतिहासः लेखकः रणजीत सिंह, रोहतक 1980।

1857 की जंग–ए–आजादी के गुमनाम शहीदः राजा नाहर सिंहः लेखकः अमृता सिंह।

सन्धि का झासा देकर राजा नाहर सिंह को अंग्रेजों ने दी फासीः नवभारत टाइमस, जनवरी, 2018।

जाट योद्धाओं के बलिदानः लेखकः भलेराम बेनीवाल, प्रकाशनः प्रकाशन जयपाल एजेन्सी, आगरा, 2005।

जाट योद्धाओं का इतिहासः लेखकः भलेराम बेनीवाल, प्रकाशन बेनीवाल पब्लिकेशन, नरवाल, हरियाणा।

जाटों की उत्पत्ति और विस्तारः लेखकः डॉ॰ अटल सिंह खोखर; जर्त तरंगिनी प्रकाशक– जयपाल एजेन्सी, आगरा, 2002।

हिन्दुस्तान में जाट सत्ताः लेखक– ई॰डी॰, डॉ॰ वीर सिंह प्रकाशन–राधकृष्ण पब्लिकेशन, जहांगीरपुरी, दिल्ली, 2001।

जाटों का इतिहासः लेखक–प्रो॰ कालिका रंजन कानूनगों, ई॰डी॰ डॉ॰ वीर सिंह, प्रकाशन–एम॰एस॰ओरिजनल, दिल्ली, 2002।

जाटों की गौरवगाथाः लेखक– डॉ॰ प्रेमराम, डॉ॰ विक्रयादित्य चौधरी, प्रकाशन–राजस्थानी ग्रंथागर, जोधपुर, 2004।

जाट इतिहासः लेखक–ठाकुर देशराज, आगरा, 1934।

जननायक ताउ देवी लालः लेखक जे के वर्मा 2012।

चौ॰ देवी लालः जीवन एवं दर्शन, लेखक डॉ॰ राजपाल सिंह, 1999, दिल्ली।

देशबन्दु सर छोटू रामः लेखक धुल सिंह, डी एस नान्दल, 1992।

हिस्ट्री ऑफ भरतपुरः लेखक ज्वाला सहाय, आगरा, 1912।

1857 स्वतंत्रता आन्दोलन के अनजाने तथ्यः 1857 सैनिक विद्रोह नही अपितु आजादी का जनआन्दोलन था, लेखक सुधीर व्यास।